एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 06, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2026)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

धनिया उत्पादन की वैज्ञानिक एवं उन्नत तकनीक: अधिक उपज, बेहतर गुणवत्ता और लाभकारी खेती की ओर

*रेहान अंजुम, डॉ. गुलाब चंद यादव, शुभम पटेल, विशाल सिंह एवं धीरज कुमार सरोज
उद्यानिकी (सब्जी विज्ञान) विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, विद्या विहार, लखनऊ
*संवादी लेखक का ईमेल पता: rehananjum00786@gmail.com

परिचय एवं मूल जानकारी

वानस्पतिक नाम	*कोरिएंड्रम सैटिवम*	*धनिया की हरी पत्तियाँ*	*धनिया का पौधा*
कुल	एपीएसी		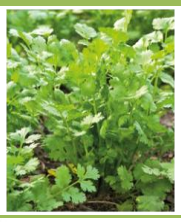
गुणसूत्र संख्या	22		
उत्पत्ति स्थान	एशिया और यूरोप		

धनिया की खेती का महत्व

धनिया की खेती करना किसानों के लिए एक मुनाफे का सौदा है। यह सब्जियों को स्वादिष्ट और सुगंधित बनाने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। इसके अनेक प्रकार के औषधीय लाभ भी हैं। धनिए का प्रयोग पाचन तंत्र, कब्ज, पेट दर्द और अन्य पाचन संबंधी समस्याओं में भी किया जाता है। इसमें एंटीऑक्सीडेंट गुण भी पाए जाते हैं जो शरीर को रोगों से लड़ने में सहायता करती है। यह एक महत्वपूर्ण कृषि उत्पादक फसल है। इसकी खेती करके आप विदेश में भी निर्यात कर सकते हैं। इसके अलावा इसमें कोलेस्ट्रॉल कम करने, रक्त शर्करा को नियंत्रित करने और कैंसर बचाव के साथ त्वचा और बालों के लिए भी लाभकारी है।

भूमि एवं भूमि की तैयारी

धनिया की खेती करने के लिए उचित जल निकास वाली अच्छी दोमट भूमि की आवश्यकता होती है और यदि असिंचित फसल करना चाहते हैं इसके लिए आपको कई भारी भूमि में इसकी खेती करनी चाहिए। धनिया अधिक क्षारीय और लवणीय भूमि को सह नहीं कर पाता है। अच्छी जल निकास वाली, जिसमें कार्बनिक पदार्थ के साथ-साथ भूमि की उर्वरता शक्ति भी अच्छी हो, उपयुक्त रहती है। इसकी खेती करने के लिए मिट्टी का पीएच मान 6 से 7.5 के बीच होना चाहिए। धनिया की खेती करने से पहले भूमि की अच्छी प्रकार से तैयारी कर लेनी चाहिए। अगर जुताई के समय भूमि में आवश्यकता अनुसार जल न हो तो भूमि की तैयारी करते समय पलेवा कर देना चाहिए। ऐसा करने से जमीन के ढेले भी टूट जाते हैं और खरपतवार भी नष्ट हो जाती हैं, जिससे बीजों का अंकुरण जल्दी और अच्छा होता है। यदि मिट्टी में नाइट्रोजन की कमी हो तो 10 से 15 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से नाइट्रोजन लेना चाहिए।

धनिया के लिए जलवायु

धनिया की खेती करने के लिए शुष्क और ठंडा मौसम अच्छा रहता है। धनिया के बीज को अंकुरित होने के लिए 20 से 25 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान की आवश्यकता होती है। धनिया शीतोष्ण जलवायु की फसल होने के कारण फूल तथा दाना बनने की अवस्था आने पर पाला से बचने की आवश्यकता होती है क्योंकि पाले से धनिए की खेती को बहुत अधिक हानि पहुंचती है।

धनिया की बुवाई का समय

धनिया की खेती रबी मौसम में की जाती है। धनिया बुवाई का उपयुक्त समय 15 अक्टूबर से 15 नवंबर का माना जाता है। यदि आप दानों के लिए धनिए की खेती करना चाहते हैं तो आपको नवंबर के प्रथम सप्ताह में इसकी बुवाई करनी चाहिए। यदि आप हरे पत्तों की फसल लेना चाहते हैं तो आपको अक्टूबर से दिसंबर के समय में धनिए की बुवाई करनी चाहिए। धनिए को पाले से अधिक नुकसान हो जाता है इसलिए धनिया को पाले से बचने के लिए नवंबर के द्वितीय सप्ताह में बोना अच्छा रहता है।

धनिये का बीज उपचार

धनिए की खेती में अनेक प्रकार के रोग और कीट देखने को मिलते हैं। उनकी रोकथाम करने के लिए बुवाई से पहले बीजों को अच्छी तरह से उपचारित करना चाहिए। भूमि और बीज जनित रोगों से बचाव के लिए बीजों को कार्बेण्डाजिम और थाराम (2:1) ग्राम/किलोग्राम या फिर कार्बेण्डाजिम 37.5 प्रतिशत 3 ग्राम प्रति किलो के हिसाब से उपचारित करना चाहिए। इसके साथ यदि आप ट्राईकोड्रमा विरिडी 5 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। यदि आप बीज जनित रोग से बचाव के लिए स्ट्रेप्टोमाइसिन 500 पीपीएम से उपचारित करते हैं तो यह अधिक लाभ देता है।

धनिया बोने की विधि

धनिया की बुवाई करने से पहले बीज को उपचारित करना चाहिए। धनिया को बोने से पहले इसके बीज को हल्का रगड़ा लगाकर दो टुकड़ों में बांट देते हैं, उपयोग करना अच्छा रहता है क्योंकि इसकी बुवाई हमेशा कतारों में करनी चाहिए। कतारों से कतारों की दूरी लगभग 7 से 10 सेंटीमीटर रखनी चाहिए। अगर आप इसकी दूरी बुवाई पंक्ति में करना चाहते हैं तो भी अच्छी उपज प्राप्त हो जाती है। एक बात का ध्यान रखना चाहिए इसके बीज की बुवाई ज्यादा गहराई में नहीं करनी चाहिए अन्यथा बीजों में अंकुरण जल्दी और ठीक से नहीं हो पाता है।

खाद एवं उर्वरक

धनिया की अच्छी पैदावार के लिए खाद एवं उर्वरक का प्रयोग जरूर करना चाहिए। सड़ी हुई गोबर की खाद 20 टन प्रति हेक्टेयर बुवाई के समय मिट्टी में मिला देनी चाहिए। बुवाई के समय 10 किलोग्राम डीएपी और 15 किलोग्राम पोटाश देना चाहिए। इसके अलावा यूरिया की 25 किलोग्राम मात्रा प्रति एकड़ के हिसाब से बुवाई के समय देनी चाहिए। इसके 1 महीने बाद दोबारा से एनपीके देना चाहिए।

धनिया में सल्फर का प्रयोग

यदि आप धनिया की खेती बीज के लिए कर रहे हैं तो आपको सल्फर का प्रयोग जरूर करना चाहिए। इसका प्रयोग पौधों पर फूल आने की अवस्था में मोनो अमोनियम सल्फेट का स्प्रे करना चाहिए। ऐसा करने से धनिया की खेती की उपज में वृद्धि हो जाती है और पौधों का विकास अच्छा होता है।

धनिया की उन्नत किस्में

हिसार सुगंध
कुंभराज
आरसीआर 435
आरसीआर 436
आरसीआर 446
आरसीआर 480
आरसीआर 728
आरसीआर 684
पंत हरितमा
जे डी 1
ए सी आर 1
सिम्पो एस 33

जी सी 2 (गुजरात धनिया)

धनिया की खेती में खरपतवार नियंत्रण

धनिया की खेती में खरपतवार की समस्या अवश्य होती है, इसीलिए पहले ही खरपतवार नियंत्रण के लिए उचित उपाय करने चाहिए। खरपतवार धनिया की फसल से पोषक तत्व और पानी का अवशोषण कर लेते हैं जिससे धनिया के पौधे को पर्याप्त पानी और पोषक तत्व नहीं मिल पाते हैं। इसके कारण धनिया की उपज में कमी आ जाती है। धनिया की खेती में कुछ खरपतवार नाशक नीचे दिए गए हैं।

पेंडिमिथिलीन

धनिया की खेती में खरपतवार नियंत्रण करने के लिए आप इसका उपयोग कर सकते हैं जो एकल पत्ती वाले और दोहरे पत्ती वाले खरपतवार को नियंत्रित करता है। इसका प्रयोग बुवाई करने के तुरंत बाद करना चाहिए।

डाईक्लोफोस

इसका उपयोग भी धनिया की खेती में खरपतवार नियंत्रण के लिए किया जाता है। यह एक दोहरे पत्ती वाले खरपतवार को नियंत्रित करता है और इसका उपयोग बुवाई करने के 45 से 60 दिनों के बाद किया जाता है।

खरपतवार का छिड़काव करते समय सावधानियाँ

खरपतवार का छिड़काव करते समय हवा की दिशा का ध्यान रखें ताकि खरपतवार नाशक धनिया की फसल पर न पड़े।

खरपतवार नाशक का छिड़काव करते समय सुरक्षा उपकरण पहने जैसे मास्क, दस्ताने और जूते।

खरपतवार नाशक का छिड़काव केवल उस समय पर करना चाहिए जब पौधे छोटे हों या धनिया की फसल अच्छी तरह से विकसित हो गई हो।

खरपतवार नाशक की मात्रा आवश्यकता अनुसार ही प्रयोग करना चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण करने के लिए आप हाथ द्वारा भी खरपतवार निकाल सकते हैं।

धनिया का उत्पादन एवं कटाई

धनिया की खेती की कटाई बीजों की किस्म के आधार पर की जाती है। भारत में धनिया का उत्पादन 2021 और 22 में एक मिलियन टन से भी ज्यादा रहा था। भारत दुनिया का सबसे बड़ा धनिया उत्पादक देश है। भारत में धनिए की औसत उपज 100 से 150 कुंतल प्रति हेक्टेयर होती है। यदि अच्छी तरह से इसकी खेती की जाए तो प्रति हेक्टेयर 200 से 250 कुंतल तक उपज प्राप्त हो जाती है। धनिया की फसल को तैयार होने में 80 से 110 दिन का समय लगता है। जब धनिया के पौधे की पत्तियां पीली पड़ने लगे और नीचे गिरने लगे तो इसकी कटाई कर लेनी चाहिए। कटाई करने के बाद इनको सुखाकर जब इसके डंठल पूरी तरह से सूख जाएं तो बीजों को निकाल लेते हैं। हरे धनिए की मांग बाजार में हमेशा रहती है इसलिए आप इसके बीजों के साथ इसके पत्तियों से भी पैसे कमा सकते हैं।

कीट नियंत्रण

अन्य फसलों के मुताबिक इसमें भी कीट का प्रकोप आप देख सकते हैं, परन्तु इस फसल में अन्य फसलों के मुताबिक कीट कम पाए जाते हैं।

चैंपा

धनिया की खेती में आक्रमण करने वाले कीटों में से यह पहला कीट है। मुख्यतः यह देखा गया है कि कीटों का आक्रमण पौधों पर पुष्प के आरम्भ होने पर होता है, परन्तु चैंपा धनिया के पौधे के आरंभ में आक्रमण करता है और यह इसके कोमल अंगों से रस को चूसता है।

नियंत्रण

चैंपा को पौधों से दूर रखने के लिए नीम के तेल को गौमूत्र में मिलाकर पौधों पर छिड़काव करना चाहिए।

रोग एवं रोकथाम

उकठा

उकठा धनिया में पाए जाने वाले रोगों में से सबसे खतरनाक है। इसके कारण पौधे मुरझा जाते हैं और इनका विकास रुक जाता है। इस बीमारी से बचने के लिए खेती से पहले खेत की अच्छी से गहरी जुताई करनी चाहिए। साथ ही खेत में उचित फसल चक्र का इस्तेमाल करना चाहिए और बीज लगाने से पहले बीजोपचार करना कभी नहीं भूलना चाहिए।

तना व्रण

तना व्रण को स्टेम गॉल के नाम से जाना जाता है। इस बीमारी में पौधे के ऊपरी भाग संक्रमण के कारण सूख जाते हैं। इससे बचने के लिए बीज को बोने से पहले नीम के तेल या गौमूत्र से अवश्य उपचारित करें।

पाला

ठण्ड के दिनों में फसल में अक्सर पाले की शिकायत सुनने को मिलती है। फसल में पाला पड़ने के कारण भारी नुकसान पहुंचता है। इसके असर को कम करने का सबसे आसान तरीका है गोबर के उपलों की राख। जी हां, इस राख का छिड़काव कर आप पौधों को पाले से बचा सकते हैं।